नवरात्रि
17 अक्टूबर 2020 से
24 अक्टूबर तक

नवरात्रि के अनुभव सफल सिद्ध प्रयोग

जो व्यक्ति हिन्दू धर्म, देवी-देवताओं में विश्वास रखते हैं अथवा जिनकी रूचि इन विषयों में है उनके लिए यह समय काल कुछ ग्रहण करने का होता है क्योंकि इस समय प्रकृति स्वयं दोनों हाथों से अपनी शक्तियाँ अर्पित करने को तत्पर रहती है। आपने देखा ही होगा कि इस समय प्रकृति का स्वयं सृजन, नव-निर्माण होता है। इन नवरात्रियों में फिर एक बार शक्ति की पूजा-अर्चना कर हम अपनी मनोकामना पूर्ति करे या शत्रु हारिणि देवी की उपासना कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करे अन्यथा उस शक्ति-रूपा नारायणि से पुत्र-पौत्र की इच्छाओं को पूरा कर मोक्ष की कामना करे!

माँ वात्सल्यमयी हैं, वो अपने पुत्रों को कभी निराश नहीं करती। वेद पुराणों में कहा भी है, पुत्र कुपुत्र हो सकता है, माता कुमाता नहीं होती उसे हमेशा अपने पुत्रों की चिंता रहती है। लेकिन ये सभी जानते हैं, माँगना तो पुत्र को ही पड़ता हैं, माँ हर एक का ध्यान रखती है, पर पुत्र को कब किस चीज की जरूरत है ये तो उसे बताना ही पड़ता है। जैसे नन्हें शिशु को दुग्धपान कराना माँ का कर्तव्य है लेकिन शिशु के रूदन करने से ही माँ दूध पिलाती है। दुर्गा के नौ रूप हैं, हर रूप में वो हर कामना की पूर्ति करती है।

नवरात्रि के पर्व पर पृथ्वी के जीव ही नहीं बल्कि समस्त देवी-देवता, ऋषि-मुनि, यक्ष-किन्नर भी शक्ति स्वरूपा दुर्गा की साधना में लीन रहते है, स्वयं को ऊर्जावान, चैतन्य और शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए चेष्टारत रहते हैं। शायद ही कोई ऐसा साधक होगा जो शक्ति की आराधना से वंचित रहता होगा। क्योंकि शक्ति सम्पन्न होने के लिए शक्ति की उपासना ही की जाती है, तभी तो ये साधकों के लिए शक्ति पर्व है। ऐसे चेतनामय क्षणों में स्वयं को माँ भगवती के सानिध्य में अर्पित कर उनसे वह इच्छित कार्य की कामना पूर्ति करना चाहता है जो वह पूर्ण नहीं कर पाता इस पर्व पर शक्तिरूपा अपने पूर्ण शक्तिमय स्वरूप में विचरण करती है। आइये हम भी कुछ ऐसे प्रयोगों को जाने जो प्रगति के लिए सहायक हो, ये प्रयोग लोक हितार्थ, एवं स्वयं हितार्थ प्रयोग करें देवी कृपा से आप के कष्ट अवश्य दूर होगें।

कलियुग में तंत्र ही सबसे अधिक प्रभावी होगा। मंत्र के तीन गुना जाप करने पर ही कलियुग में उनका प्रभाव दृष्टिगोचर होगा। तुरन्त सफलता के लिये तांत्रिक प्रयोग ही कारगर होंगे। ऐसी ही कितनी बाते तंत्र के विषय में ग्रंथों में पढ़ने में आती है।

तन्त्र का दूसरा नाम 'आगम' है। अतः तन्त्र और आगम एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। वैसे आगम के बारे में यह प्रसिद्ध है कि-

आगतं शिवपक्त्रेभ्यो, गतं च गिरिजामुखे।
मतं च वासुदेवस्य, तत् आगम उच्यते।।

सभी मंत्रों व अनुष्ठानों का विस्तार पूर्वक विचार ज्ञात हो तथा लोगों की भय से रक्षा हो वही तंत्र है। जो शिवजी के मुख से आया, वह पार्वतीजी के मुख में पहुंचा तथा भगवान विष्णु ने अनुमोदित किया, वही आगम है।

तंत्रों के प्रथम प्रवक्ता भगवान शिव हैं और सम्मति देने वाले भगवान विष्णु हैं। भोग और मोक्ष के उपाय बताने वाला शास्त्र 'आगम' अथवा तंत्र कहलाता है।

यदि आपमें साहस है, क्षमता है, कुछ कर गुजरने की प्रबल इच्छा है और वास्तव में अपने जीवन में सफलता पाना चाहते हैं तो ये प्रयोग जरूर आपके सफलता के शिखर पर पहुंचने के पायदान सिद्ध होंगे। तीर के समान तुरन्त प्रभावी इन अचूक, विलक्षण, अद्वितीय सिद्धिदायक प्रयोगों पर मात्र सिद्धहस्त तांत्रिकों का ही अधिकार नहीं आप भी ये प्रयोग स्वयं कर सकते हैं, इनका प्रभाव महसूस कर सकते हैं। ध्यान

बहुत शुभ होता है नवरात्रि में नवनाग स्तोत्र का पाठ

आदिकाल से नाग सम्माननीय व पूज्य है। शारदीय नवरात्र में नवनाग स्तोत्र का जाप बहुत शुभ माना जाता है।

अनंतं वासुकिं शेषम् पद्मनाभम् च कंबलम्।
शंखपालम् धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।
एवानि नव नामानि नागानाम् च महात्मनाम्
सायंकाले पठेन्नित्यम् प्रातःकाले विशेषतः।
तस्य विष भयम् नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।।

अनंत, वासुकी, शेषनाग, पद्मनाभ, कंबलम्, शंखपाल, धृतराष्ट्र, तक्षक व कालिय, इन नौ नागों के नामों का स्मरण सायंकाल और विशेषकर प्रातःकाल जो करता है उसे किसी प्रकार का विषय भय नहीं होता है तथा नाम स्मरण करने वाला सर्वत्र विजयी होता है। आदिकाल से नागदेव को देवतातुल्य समझा जाता है।

रखें कि कोई त्रुटि हो जाने पर भी इन प्रयोगों का कोई विपरित प्रभाव नहीं होगा।

महानिर्वाण तंत्र में कहा गया है-

गृहस्थस्य क्रियाः सर्वा आगमोक्ताः कलौ शिवे।
नान्यमार्गेः क्रियासिद्धिः कदापि गृहेमेधिनाम्।।

हे पार्वती! कलियुग में गृहस्थ केवल आगम-तंत्र के अनुसार ही कार्य करेंगे। अन्य मार्गों से गृहस्थों को कभी सिद्धि नहीं मिलेगी।

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है, हर जगह, घर, नौकरी, व्यवसाय में राजनीति है, चाणक्य नीति है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में कठोर अनुभव नहीं किये, संघर्ष नहीं देखा वह एकदम से जब अपने आप को इस बाहरी दुनिया में झोंकता है तब उसे पता चलता है, दुनियाँ क्या है, दुनियादारी क्या है, समाज क्या है, रिश्ते क्या हैं, हर व्यक्ति दो-तरफा लगता है। कहता कुछ है तो करता कुछ है।

यदि आप भी जीवन में इन परिस्थितियों से दो-चार हुए है, अपने आप को छला हुआ महसूस कर रहे हैं तो आपको देवी शक्ति की नितांत आवश्यकता है, क्योंकि जिसे उस का साथ मिल जाये वहाँ कोई चाणक्य नीति अपना प्रभाव नहीं दिखला सकती है।

सावधानी-

नवरात्रि की साधनाएँ एवं प्रयोग करने से पूर्व कुछ सावधानियों पर गंभीरता पूर्वक विचार कर लें।

- हर प्रयोग नवरात्रि स्थापना से लेकर दुर्गानवमी तक अर्थात् 17 अक्टूबर से 24 अक्टूबर तक करना है। 24 अक्टूबर की रात्रि को या 25 अक्टूबर की प्रातः प्रयोग सामग्री का विर्सजन करना है।
- एक व्यक्ति कितने ही प्रयोग कर सकता है कोई पाबंदी नहीं है। लेकिन एक प्रयोग करने के बाद दूसरे प्रयोग के लिए उसे पुनः हाथ मुँह धोकर बैठना चाहिये।
- हर प्रयोग करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि आप किस कार्य के लिए यह प्रयोग कर रहे हैं। संकल्प में अपना नाम, पिता का नाम, गौत्र, शहर, देश का नाम लें। विवाहित स्त्रियाँ अपना नाम, पति का नाम, ससुराल का गोत्र, शहर एवं देश का नाम लें।
- साधना स्थल में प्रवेश करने से पूर्व ही स्नान कर लें। महिलाएँ, लड़कियाँ स्नान के साथ ही साथ सिर के बाल भी धोकर पूजा में बैठे। पूजा में बिना कंघी किये बालों में ही बैठा जाता है।
- हर प्रयोग में धूप-दीप, दीपक एवं अगरबत्ती आदि का प्रयोग करें। जहाँ आप पूजा करें वहाँ पूर्ण स्वच्छता रखें।
- समय से पूर्व ही सामग्री आदि पूजा स्थान पर एकत्रित कर लें।
- धुले हुए शुद्ध पूजा के समय पहनने वाले वस्त्र पहले से ही तैयार रखें।
- बाजोट (पट्टा), चौकी पूजा स्थान पर पहले से ही धो कर रख दें।
- पूजन में कार्य आने वाला दीपक, घी-तेल, चावल, कुंकुम, रोली, केशर जो भी पूजा के लिए आवश्यक वस्तुएँ चाहिये, समय से पहले तैयारी कर एकत्रित कर लें।
- कम्बल अथवा कुश का बना आसन तैयार रखें।

दुर्गा द्वात्रिंशन्नाममाला

दुर्गा के बत्तीस नाम माला का जो मनुष्य प्रतिदिन पाठ करता है वह निःसंदेह सब प्रकार के भय एवं विपत्ति से मुक्त होता है। यह दुर्गा द्वत्रिशृं नाममाला स्वयं मां दुर्गा द्वारा देवगणों को कही गई अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ स्तुति है। सांसारिक कष्टों एवं संकटों के निवारणार्थ देवी भगवती के निम्न बत्तीस नामों का नियमित पाठ करना सबसे सरल एवं श्रेष्ठ उपाय है।

दुर्गा दुर्गतिर् शमनी दुर्गापद्धि निवारिणी
दुर्गमच् छेदनि दुर्ग साधिनी दुर्ग नाशिनी।
दुर्गतो द्धारिणी दुर्गनि हन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गम ज्ञानदा दुर्ग दैत्य लोक दवानला
दुर्गमा दुर्गमा लोका दुर्गमात्म स्वरूपिणी
दुर्गमार्ग प्रदा दुर्गम विद्या दुर्ग माश्रिता
दुर्गम ज्ञान संस्थाना दुर्गम ध्यान भासिनी
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थ स्वरूपिणी
दुर्गम असुर संहन्त्री दुर्गम आयुध धारिणी
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्ग दारिणी
नामावलि मिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः
पठेत सर्व भयान् मुक्तो भविष्यति न संशयः।।

- जाप करने की माला संभाल कर रख लें। यदि आपके साथ अन्य व्यक्ति भी साधना करने वाले हैं तो गौमुखी का प्रयोग करें जिससे जाप करते हुए हाथ किसी को नजर नहीं आये।
- साधना प्रयोग समाप्त होने पर यथा शक्ति दान-पुण्य अवश्य करें। किसी भी सफाई करने वाले व्यक्ति को, कोढ़ी को, शारीरिक रुप से अपंग व्यक्ति को अपने पहनने के कपड़े, अनाज आदि अपने शरीर पर से सात बार घुमा कर दान करें।
- साधना के पूरे काल में पूर्ण पवित्रता के साथ जप करें।
- साधक को लाल/पीले/सफेद रंग के वस्त्र धारण करने चाहिये। पुरुषों को धोती या पायजामा-कुर्ता, शर्ट-पेंट आदि पहनना चाहिये। ऊपर दुपट्टा या शॉल भी ओढ़ सकते हैं। स्त्रियाँ लाल या पीली साड़ी पहन सकती है।
- साधना काल में अर्थात् नवरात्रि के पूर्ण काल में बाल न कटवायें।
- साधना घर के एंकात कमरे में, देवी मन्दिर में, पर्वत शिखर पर, मन्दिर में या गुरु के समीप बैठ कर ही की जानी चाहिये।
- साधना काल में जहाँ तक हो सकें व्यर्थ बात, वाद-विवाद, कहानी-किस्से की पुस्तकें, फिल्में आदि से दूर रहें। धार्मिक साहित्य का अध्ययन करें, ध्यान करें, मनन करें अथवा भजन-कीर्तन करें।
- जब प्रतिदिन का प्रयोग जाप सम्पन्न हो जाये तब फिर आचमनी या दाहिने हाथ में जल लेकर अपना संकल्प पुनः दोहराये और अंत में "मैंने जो जप किया है वह माँ आपको समर्पित करता हूँ" कहकर दुर्गा माताजी के हाथों में जल छोड़ रहे है ऐसा आभास करते हुए जल छोड़ दें।
- विर्सजन- विजयादशमी के दिन समस्त सामग्री को कुछ दक्षिणा व पुष्प के साथ दुर्गा मंदिर में चढ़ा दें।

लीजिए आपकी मनोकामना पूर्ति के लिए, भौतिक समृद्धि के लिए, रोग निवारण के लिए, शत्रु दमन के लिए, कार्य सिद्धि के लिए नवरात्रि में किये जाने वाले 24 कैरेट खरे सोने जैसे प्रयोग प्रस्तुत हैं।

1. शीघ्र विवाह भद्रा प्रयोग-

प्रयोजन-

विवाह में बाधा विशेषकर कन्याओं के लिए विकट समस्या उत्पन्न कर देती है। उच्च शिक्षित, सुंदर, प्रतिभावान होने के पश्चात् भी वर नहीं मिल पाते, लेकिन कभी-कभी सुयोग्य पुत्र के विवाह में भी अनेक अड़चनें आ जाती है। 'शीघ्र विवाह भद्रा प्रयोग' इस समस्या का उचित एवं अचूक समाधान है।

प्रयोग विधि-

यह प्रयोग नवरात्रि के प्रथम दिन रात्रि में सम्पन्न किया जाये तो उत्तम है, वैसे इसे नवरात्रि के नौ दिनों में कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। उचित तो होगा कि विवाह की इच्छा रखने वाली कन्या अथवा पुरूष स्वयं प्रयोग संपन्न करें, परंतु ऐसा संभव न हो पाने पर माता-पिता भी प्रयोग कर सकते हैं।

सर्वप्रथम स्नान आदि करके स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण करें। इसके पश्चात् उत्तर दिशा की ओर मुख कर, सफेद कपड़े के आसन पर बैठ जायें। अपने सामने लकड़ी का बाजोट लगायें तथा उस पर सफेद वस्त्र बिछाकर

एक थाली रख दें। अब इस थाली में सफेद फूलों का आसन लगायें तथा उस पर 'भद्रा चक्र' स्थापित करें। एक शुद्ध घी का दीपक भी प्रज्जवलित कर लें। अब संकल्प लें कि 'मैं स्वयं के लिये या अपने पुत्र-पुत्री के शीघ्र विवाह, या सुयोग्य वर के लिये यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।' इसके पश्चात् एकाग्रचित्त होकर निम्न मंत्र की 'भद्रा माला' से 11 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ क्रीं क्लीं विवाह बाधा निवारणाय फट्।।

मंत्र जाप की समाप्ति पर भद्रा चक्र को कन्या/पुत्र के बाजू पर बांध दें, यदि संतान न पहनें, तो उसकी फोटो के साथ बांधकर रख दें। (नवरात्रि के पहले दिन ही प्रयोग संपन्न हो तो बेहतर है, क्योंकि चक्र का नवरात्रि काल में धारण करना आवश्यक है।) नवरात्रि के बाद दोनों वस्तुओं को कुंए अथवा तालाब में प्रवाहित करें, शीघ्र ही वर/वधू की प्राप्ति होगी।

साधना सामग्री पैकट-1100/-रुपये।

2. भद्रकाली उच्चाटन प्रयोग-

प्रयोजन-

गृहस्थ जीवन की समस्याओं में विशेषकर आज के आधुनिक युग में एक विकटतम समस्या है-पुत्र अथवा पुत्री का बुरी संगत में फंस जाना, जिसके कारण पारिवारिक मर्यादाओं को त्याग, अपनी पढ़ाई-लिखाई को भुलाकर वे व्यर्थ के क्रियाकलापों, मदिरापान, जुआ आदि में संलिप्त हो जाते हैं। ऐसी संगति से अगर उनका मोह भंग न कराया जाए, तो उनका जीवन ही बर्बाद हो सकता है। इसी कार्य के लिए है तीव्र 'भद्रकाली उच्चाटन प्रयोग'।

"माँ" शब्द अपने आप में पूर्ण एवं पवित्र है, माँ शब्द जिह्वा पर आते ही हृदय में जो भाव प्रकट होता है, उसे शब्दों द्वारा व्यक्त करना मुमकिन नहीं, 'माँ' शब्द में सम्पूर्ण सृष्टि समाई हुई है, माँ तो साक्षात् देवी है, माँ के गोद में जो ममता, अपनत्व, दुलार, शांति है, उसका मूल्य संसार में कोई नहीं चूका सकता है।

जब इन्सान चारों ओर अशांति से घिर जाता है, तब वह माँ की गोद में आकर अपना सारा दुःख भूल जाता हैं माँ के प्यार की वर्षा से वो इतना भीग जाता है कि सारे कष्ट कुछ पलों के लिए भूल जाता है। तो चिन्ता क्यों करते हो, सबकुछ माँ दुर्गा पर छोड़ दो, उससे विनति करो, उसके आंचल में छुप जाओ, वह स्वयं ही तुम्हारे सारे दुःख हर लेगी। इस नवरात्रि के पावन पर्व पर इन प्रयोगों को सम्पन्न करें और बाकी छोड़ दें अपनी माँ पर!!

प्रयोग विधि-

नवरात्रि के नौ दिनों में से किसी भी दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है। रात्रि के दस बजे के बाद स्नान आदि करके नीले वस्त्र धारण करें। अब दक्षिण दिशा की ओर मुख करके काले आसन पर बैठें। अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट लगायें तथा उस पर नीला वस्त्र बिछाएं। बाजोट पर एक थाली रखें तथा कुंकुम से रंगे हुए अक्षत थाली में बिखेर दें। अब थाली में 'सिद्ध भद्रकाली कल्प' को स्थापित करें तथा तेल का दीपक जलाकर संकल्प करें। तत्पश्चात् 'भद्रकाली उच्चाटन माला' से निम्न मंत्र का 15 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ क्लीं उच्चाटय भद्रकालि अवतर अवतर ॐ फट्।।

मंत्र जप के पश्चात् कल्प एवं माला दोनों को उस व्यक्ति के (पुत्र/पुत्री) के फोटो के साथ रख दें। प्रयोग समाप्त होने के 21 दिन पश्चात् माला एवं भद्रकाली कल्प को दक्षिण दिशा में जाकर भूमि में दबा दें। आप अनुभव करेंगे कि कुछ समय बाद मां काली की कृपा से युवक/युवती सही मार्ग पर लौटने लगे हैं।

साधना सामग्री पैकट-1100/-रुपये।

3. सुमुखी सौंदर्य प्राप्ति प्रयोग-

प्रयोजन-

प्रत्येक युवक/युवती का सपना होता है कि वे सुन्दर दिखें, उनमें एक आकर्षण हो कि हर कोई उनकी ओर खींचा चला आये। उनके व्यक्तित्व का निखार हो, हर कोई उनके पास रहना चाहे उनसे बात करना चाहे। यदि आप भी समझते हैं कि आपके व्यक्तित्व में निखार नहीं है, आपके चेहरे में तेज नहीं है, आप आकर्षक दिखाई नहीं देते हैं तो आपको यह प्रयोग करना चाहिये।

प्रयोग विधि-

यद्यपि सौंदर्य प्रसाधनों से प्रकृति द्वारा प्रदत्त स्वरूप को परिवर्तित कर पाना संभव नहीं, परंतु दैवीय कृपा से शरीर को सुगठित, त्वचा को कांतिमान तथा मुख मण्डल को लावण्य युक्त बनाया जा सकता है। यही नहीं माँ की कृपा हो जाये तो सुंदर केश, लंबा कद भी प्राप्त किया जा सकता है।

यह प्रयोग भी नवरात्रि के नौ दिनों में कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। प्रातःकाल स्नान आदि करके स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें तथा शान्त स्थान पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके कपड़े के पीले आसन पर बैठ जाएं। अपने सामने चौकी पर गुलाब के सुगंधित पुष्प बिछाकर उस पर 'सुमुखी सौंदर्या गुटिका' को स्थापित करें तथा इत्र छिड़क लें। 'इसके पश्चात् सुमुखी चैतन्य माला' से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ श्रीं ह्रीं सौन्दर्य सिद्धये ॐ।।

प्रयोग के पश्चात् माला गले में पहन लें तथा गुटिका को पूजा घर में या सुरक्षित स्थान पर रख दें। नवरात्रि के बाद सुमुखी सौन्दर्या और माला को नदी/तालाब आदि में प्रवाहित कर दें। धीरे-धीरे आप अपने शरीर में एक नवीन शक्ति या आकर्षण का संचरण अनुभव करेंगे।

साधना सामग्री पैकेट-1100/-रुपये।

4. उग्र धूमावती प्रयोग-

प्रयोजन-

यदि आपके घर पर या आप पर किसी ने अभिचारक प्रयोग किया हो, बाधा प्रयोग किया हो और आपको उससे परेशानी हो रही हो। आय नहीं हो रही हो, दरिद्रता बनी रहती हो, सभी काम बनते-बनते बिगड़ जाते हों, स्वास्थ्य उत्तम नहीं रहता हो, कार्य करने का मन नहीं करता हो, मन उचाट हो गया हो आदि परेशानियाँ हों तो आपको निश्चित रूप से यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिये और लाभ उठाना चाहिये।

यह उग्र प्रयोग है, उग्र इसलिए क्योंकि इसका हाथों हाथ प्रभाव देखने को मिलता है और जिस प्रकार से कड़कती बिजली तीव्र प्रकाश उत्पन्न कर देती है, उसी प्रकार यह प्रयोग व्यक्ति की सभी दुविधाओं और शत्रुओं का अंत कर देता है और वह फिर निश्चिंत होकर उन्नति की तरफ अग्रसर हो जाता है। इसमें 'उग्र धूमावती यंत्र' की आवश्यकता होती है।

प्रयोग विधि-

इस प्रयोग को नवरात्रि के तीसरे दिन रात्रि में सम्पन्न करना चाहिये। स्नान आदि से निवृत्त होकर साधक काले वस्त्र धारण करे और काले आसन पर दक्षिणाभिमुख होकर बैठें और अपने सामने काले वस्त्र से ढके बाजोट पर 'उग्र धूमावती यंत्र' स्थापित कर उसका काजल से पूजन करें। इसके उपरांत निम्न मंत्र का 25 मिनट तक मंत्र जप करें-

मंत्र-।। धूं धूं तंत्र बाधां स्तंभय नाशय ठः ठः फट्।।

अगले दिन यंत्र को जलाशय में अर्पित कर दें, ऐसा करने से प्रयोग संपन्न होता है और साधक वह सब प्राप्त करता है, जो उसका अभीष्ट है।

साधना सामग्री पैकेट-1500/-रुपये।

5. बगलामुखी हृदयंगम प्रयोग-

प्रयोजन-

बगलामुखी को बिना कारण कुछ लोगों ने अत्यंत खतरनाक बताया है, जबकि यह वास्तव में अत्यंत ही सौम्य एवं सहजता से सिद्ध होने वाली महाविद्या है। 'बगलामुखी हृदयंगम प्रयोग' इसी महाविद्या से संबंधित प्रयोग है और इसमें हृदयंगम अर्थ है कि प्रयोग संपन्न करने के उपरांत एक प्रकार से बगलामुखी साक्षात् साधक के हृदय में विराजमान हो जाती है और तब साधक स्वतः ही अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। शत्रु स्वयं ही आकर उसके सामने नतमस्तक हो जाते हैं और समझौता कर लेते हैं।

साथ ही साथ उसे अद्वितीय ज्ञान की प्राप्ति होती है उसकी मेधा शक्ति बहुत अधिक तीव्र हो जाती है और वह सहज ही धन-धान्य, लक्ष्मी, यश, प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है।

प्रयोग विधि-

यह प्रयोग नवरात्रि के नौ दिनों में किसी भी दिन सम्पन्न किया जा सकता है। साधक स्नान आदि करके स्वच्छ पीली धोती धारण कर पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके रात्रि बारह बजे के बाद बैठे और अपने सामने पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर थाली में 'बगलामुखी हृदयंगम यंत्र' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करें। इसके उपरांत 'पीली हकीक माला' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ ह्रीं शत्रुनाशाय फट्।।

अगले दिन यंत्र एवं माला किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग में सफलता प्राप्त होती है और साधक हर प्रकार से उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

साधना सामग्री पैकेट-1500/-रुपये।

6. पति वश्य साधनाः-

1. उद्देश्यः-पति को अपनी ओर आकर्षित करना
2. वस्त्रः-लाल
3. आसनः-लाल
4. जाप संख्याः-7 माला
5. साधक की दिशाः-पूर्व
6. मालाः-वशीकरण माला
7. साधना अवधिः-पांच दिन
8. साधना सामग्रीः-दुर्गा बीसा यंत्र, 9. गोमती चक्र एवं वशीकरण माला

विसर्जनः-विजयादशमी

10. मंत्रः- ''ॐ ह्रीं मम 'अमुकं' वशी कुरू कुरू स्वाहा''

पति का विमुख हो जाना, सम्बन्ध विच्छेद हो जाना आदि समस्याओं के समाधान हेतु इस प्रयोग को करें, करूणामयी माँ भगवती आपकी मनोकामना जरूर पूरी करेगी। एक बाजोट पर 'दुर्गा बीसा यंत्र' को स्थापित कर सामने एक चावल की ढेरी पर 'पाँच गोमती चक्र' रख दें एवं वशीकरण माला से उपरोक्त मंत्र का जाप करें। 'अमुक' के स्थान पर वशीकरण करने वाले का नाम ले (पति/प्रेमी) फिर चावल चिड़ियों को डाल दें, दुर्गा बीसा यंत्र एवं अन्य सामग्री को दुर्गा मंदिर में पुष्प सहित अर्पित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट न्यौछावर-1500/-रु.

7. अन्नपूर्णा प्रयोग-

प्रयोजन-

अन्नपूर्णा मां की कृपा हो तो घर में कभी अन्न एवं भोज्य पदार्थों की कमी नहीं हो सकती। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कृषकों तथा कृषि उत्पादों के व्यापारियों के लिए भी यह प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा इसको संपन्न करने से अन्न भंडार भरे रहते हैं और उपज भी अच्छी होती है।

प्रयोग विधि-

नवरात्रि के पांचवे दिन रात्रि में इस प्रयोग को सम्पन्न करें। पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं। सामने चौकी पर 'अन्नापूर्णा यंत्र' स्थापित करें तथा घी का दीपक जलाएं। यंत्र का पूजन करें फिर निम्न मंत्र का 3 दिन तक नित्य प्रातः 30 मिनट तक मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ श्रीं अन्नपूर्णे भगवति ॐ स्वाहा।।

प्रयोग संपन्न हो जाने के पश्चात् यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें या अपने खेत में ले जाकर गाड़ दें। इस प्रयोग से न केवल उपज अच्छी होगी, अपितु घर में समृद्धि तथा संपन्नता का भी आगमन होगा।

साधना सामग्री पैकेट-1500/-रुपये।

8. नीलमणि तारा प्रयो

प्रयोजन-

कई बार कोशिशों के बावजूद भी व्यक्ति को पदोन्नति प्राप्त नहीं होती

श्री भगवती स्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पाप विनाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भ निशुम्भ कपाल धरे, प्रणामामि तु देवि नरर्तिहरे।।1।।
जय चन्द्र दिवाकर नेत्रधरे, जय पावक भूषित वक्त्र वरे।
जय भैरव देह निलीन परे, जय अन्धक दैत्य विशोष करे।।2।।
जय महिष विमर्दिनि शूलकरे, जय लोक समस्तक पापहरे।
जय देवि पितामह विष्णुनते, जय भास्कर शक्र शिरोऽवनते।।3।।
जय षण्मुख सायुध ईशनुते, जय सागर गामिनि शम्भु नुते।
जय दुःख दरिद्र विनाश करे, जय पुत्र कलत्र विवृद्धि करे।।4।।
जय देवि समस्त शरीर धरे, जय नाक विदर्शिनि दुःखहरे।
जय व्याधि विनाशिनि मोक्ष करे, जय वान्छित दायिनि सिद्धिवरे।।5।।
एतद् व्यास कृतं स्तोत्रं यः पठेनु नियतः शुचिः।

और उससे कम अनुभव तथा आयु के व्यक्ति भी उससे आगे निकल जाते हैं, अधिकारी रूष्ट रहते हैं एवं घर पर और बाहर भी कोई सम्मान प्राप्त नहीं होता। आप भी चाहते हैं कि आपकी पदोन्नति हो, अधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न रहे तथा घर में व बाहर आपको पूर्ण सम्मान प्राप्त हो तो आपको यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिये।

प्रयोग विधि-

नवरात्रि के नौ दिनों में किसी भी दिन यह प्रयोग सम्पन्न करें। यह प्रयोग रात दस बजे के उपरांत करें। साधक स्नान कर सफेद धोती धारण कर गुलाबी आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं और अपने सामने गुलाबी कपड़े से ढके बाजोट पर 'नीलमणि तारा यंत्र' स्थापित कर अपनी इच्छा का उच्चारण करें और यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। इसके उपरांत निम्न मंत्र का 30 मिनट तक उच्चारण करें-

मंत्र-।। ऐं ओं ह्रीं नीलतारायै क्ली हुं फट्।।

अगले दिन साधक यंत्र को किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से यह प्रयोग सफल होता है और साधक सभी प्रकार से पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

साधना सामग्री पैकेट-1500/-रुपये।

9. भुवनेश्वरी सर्वमांगल्य प्रयोग-

प्रयोजन-

इस प्रयोग का कई ग्रंथों में वर्णन किया गया है, क्योंकि इस छोटे से प्रयोग में ही जीवन की सारी स्थितियां निहित है। 'सर्वमांगल्य' का अर्थ है-सर्व प्रकार से मंगल और निश्चय ही जो व्यक्ति इस प्रयोग को संपन्न कर लेता है वह हर प्रकार से सुखी एवं आनंदप्रद जीवन जीता है। धन, भोग, ऐश्वर्य, कीर्ति, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा उसे सहज ही प्राप्त हो जाता है। उसका व्यक्तित्व सम्मोहक एवं आकर्षक हो जाता है और जो भी उसके संपर्क में आता है वह उसके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

प्रयोग विधि-

नवरात्रि के दूसरे दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिये। यह प्रयोग प्रातः सात बजे से पहले संपन्न करना चाहिए। साधक स्वच्छ पीली धोती धारण कर पीले आसन पर उत्तराभिमुख होकर बैठें और अपने सामने पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर थाली में 'भुवनेश्वरी सर्वमांगल्य यंत्र' स्थापित कर उसका केसर से पूजन करें। इसके उपरांत 'सर्वमांगल्य माला' से निम्न मंत्र की 4 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ ह्रीं भगवति आगच्छ ॐ नमः।।

अगले दिन माला एवं यंत्र किसी जलाशय में अर्पित कर दें। ऐसा करने से यह प्रयोग सफल होता है और साधक हर प्रकार से उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

साधना सामग्री पैकेट- 1500/-रुपये।

10. प्रमोशन में रुकावट निवारक साधन-

1. उद्देश्यः-पदोन्नति प्राप्ति, अधिकारी वर्ग से सामंजस्य व शत्रु बाधा निवारण
2. वस्त्रः-सफेद
3. आसनः-गुलाबी
4. जाप संख्याः-कम से कम 50 मिनट
5. साधक की दिशाः-उत्तर
6. साधना अवधिः-3 दिन
7. साधना सामग्रीः-तारा यंत्र
8. विसर्जनः-विजयादशमी
9. मंत्रः- ऐं ॐ ह्रीं नीलतारायै क्लीं हुं फट्।।

कई बार कोशिशों के बावजूद भी व्यक्ति को पदोन्नति प्राप्त नहीं होती और उससे कम अनुभव तथा आयु के व्यक्ति भी उससे आगे निकल जाते हैं, अधिकारी रूष्ट रहते हैं एवं घर पर और बाहर भी कोई सम्मान प्राप्त नहीं होता।

इसके साथ-साथ शत्रु तंग करते हैं, ऐसी स्थिति में व्यक्ति के पास एक ही उपाय शेष रह जाता है और वह है 'नीलमणि तारा प्रयोग' क्योंकि इस प्रयोग को संपन्न करने के बाद से ही व्यक्ति का जीवन परिवर्तित हो जाता है। उसकी पदोन्नति हो जाती है, निरन्तर उन्नति होने लगती है। अधिकारीगण उसे सम्मान की दृष्टि से देखते हैं तथा उसका व्यक्तित्व आकर्षक, तेजस्वी एवं प्रचण्ड हो जाता है और उसके शत्रु उसके नाम से ही कांपते हैं।

यह प्रयोग रात दस बजे के उपरांत करें। साधक स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर गुलाबी आसन पर, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं और अपने सामने गुलाबी कपड़े से ढ़के बाजोट पर 'नीली आभा वाली माँ तारा का ध्यान करते हुए 'तारा यंत्र' स्थापित कर अपनी इच्छा का उच्चारण करें और यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। इसके उपरान्त उपरोक्त मंत्र का 50 मिनट तक उच्चारण करें।

विजयादशमी को साधक यंत्र को किसी जलाशय में विसर्जित कर दें या दुर्गा मंदिर में अर्पित कर दें। ऐसा करने से यह प्रयोग सफल होता है और साधक सभी प्रकार से पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

सम्पूर्ण साधना सामग्री पैकेट-1500/-रुपये।

11. अपने स्वयं के मकान के लिए-

1. उद्देश्यः-स्वयं का मकान
2. वस्त्रः-लाल
3. आसनः-लाल
4. जप संख्याः-कुल 21 माला
5. साधक की दिशाः-उत्तर
6. मालाः-रक्त चंदन की माला
7. साधना अवधिः-3 दिन
8. साधना सामग्रीः-एक मोती शंख, आठ कौड़ियां, रक्त चंदन की माला
9. विसर्जनः-विजयादशमी को नियम अनुसार।
10. मंत्रः- ।। ॐ देवोत्थाय नमः।।

नवरात्रि में एक थाली में अष्टदल बनाकर उस पर केशर कुकुंम, पुष्प आदि से पूजन कर मोती शंख अष्टदल के बीच में स्थापित कर दें एवं अष्टदल के आठों खानों में एक-एक कौड़ी स्थापित कर दें। रक्तचंदन की माला से उपरोक्त मंत्र की 7 माला का जप 3 दिन में पूर्ण करें। विजयादशमी के दिन जमीन में अलग-अलग दो खड्डे खोद कर एक में मोती शंख को दबा दें तथा दूसरें में कौड़िया दबा दें। शीघ्र भवन निर्माण का योग निर्मित होगा, इसमें संदेह नहीं।

साधना सामग्री पैकेट न्यौछावर-1500/-

12. मन चाहे से विवाह के लिए साधना-

1. उद्देश्यः-प्रेमविवाह व इच्छानुसार विवाह प्राप्ति के लिए
2. वस्त्रः-लाल
3. आसनः-लाल
4. जाप संख्याः-1 माला
5. साधक की दिशाः-पूर्व
6. मालाः-गौरी माला
7. साधना अवधिः-7 दिन
8. साधना सामग्रीः-गौरी यंत्र व गौरी माला, योगिनी गुटिका
9. विसर्जनः-विजयादशमी
10. मंत्रः- ।। ॐ ह्रीं योगिनी सर्वं वशमाकर्षय स्वाहा।।

जो कन्याएं अपनी इच्छानुसार विवाह करना चाहती है अथवा अपने प्रेम विवाह में सफलता प्राप्त करना चाहती है तथा यदि कोई बिलकुल ही युग के आचार-विचार के विरूद्ध बात न हो तो वे स्वयंवरा योगिनी साधना अवश्य ही संपन्न करें।

मूल रूप से नवरात्रि को जब एकांत हो और किसी प्रकार के विघ्न की संभावना न हो, तो कन्या यह साधना संपन्न करें। यदि नौ दिन निरन्तर साधना नहीं कर सकती है तो सप्ताह में तीन दिन अवश्य करें, एक माह में इसका परिणाम सामने आता है।

इस साधना में तीन वस्तुएं मुख्य रूप से आवश्यक है- गौरी यंत्र, जिसका कि कामेश्वरी योगिनी मंत्रों से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठायुक्त होना आवश्यक है। इसके अलावा योगिनी गुटिका तथा मंत्र जप हेतु गौरी माला आवश्यक है।

सर्वप्रथम अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं आज से अमुक कार्य हेतु या अमुक व्यक्ति से विवाह हेतु यह साधना कर रही हूं। माता शक्ति एवं भगवान शिव मेरी साधना में सहायक हो।

इसके पश्चात् सर्वप्रथम एक माला 'ॐ शिवायै सतव रूपायै नमः' मंत्र का जप करें।

अपने सामने एक पात्र में 'गौरी यंत्र' को किसी प्लेट पर स्थापित करें तथा कुंकुम, अष्टगंध इत्यादि से पूजा करें, चावल अर्पित करें, पुष्प चढ़ायें और यथा विधि पूजन करके गौरी माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला जप करें।

इस प्रकार प्रतिदिन मंत्र जप कर एक लाल पुष्प को यंत्र पर अर्पण करें। या तो इस साधना को सात दिन में पूर्ण करें अथवा सप्ताह में तीन दिन करते हुए एक माह तक साधना पूर्ण करें। इसके पश्चात् गुटिका यंत्र तथा माला को लाल कपड़े में बांधकर शिव-गौरी मंदिर में गौरी के हाथ में अर्पित कर दें।

श्रद्धायुक्त साधना से शिव-शक्ति की कृपा से कन्या अपना इच्छित वर अवश्य ही प्राप्त करती है।

साधना सामग्री पैकेट न्यौछावर- 1500/-रुपये।

13. नशे से मुक्ति सम्भव है?

1. उद्देश्यः-नशे से मुक्ति 2. वस्त्रः-सफेद
3. जप संख्याः-1 माला प्रतिदिन 4. आसनः-सफेद
5. साधक की दिशाः-पूर्व 6. मालाः-संकल्प सिद्धि माला
7. साधना अवधिः-3 दिन या अधिक से अधिक 1 माह
8. साधना सामग्रीः-संकल्प शक्ति वृद्धि कवच, संकल्प सिद्धि माला
9. विसर्जनः-विजयादशमी या एक माह के पश्चात्
10. मंत्रः-।ॐ गलौं सर्व साक्षी प्राण आत्मने नमः ग्लौं ॐ।।

वर्तमान सामाजिक परिवेश में मद्यपान करने वालों की संख्या में वृद्धि होती ही जा रही है। इसके दुष्परिणामों को जानने के उपरान्त भी वे उसे छोड़ नहीं पाते हैं, क्यों नहीं छोड़ पाते हैं? सुरा पान वास्तव में ही हानिकारक है? क्या उसे छोड़ने की कोई मंत्र साधना नहीं है?

प्रत्येक मनुष्य जीवन में आनन्द प्राप्त करना चाहता है, हिलोर प्राप्त करना चाहता है, मस्ती चाहता है, नृत्य और थिरकन चाहता है, जीवन में संगीत प्राप्त करना चाहता है, जीवन में हृदय के तारों में राग और सुर चाहता है। जब यह आनन्द, यह राग, यह सुर व्यक्ति को बाहर से प्राप्त नहीं हो पाता, तो उसे कृत्रिम रूप से इसे प्राप्त करना पड़ता है, हठात् प्राप्त करना पड़ता है, तभी जीवन रसयुक्त बना रह सकता है। और जब तक जीवन में रस नहीं है व्यक्ति कुछ कर नहीं सकता। प्राचीन समय में बड़े-बड़े राजा-महाराजा अनेक राजसी षडयंत्र, प्रजा संचालन, युद्ध नीति एवं कार्यभार के कारण तापयुक्त और तनावग्रस्त हो जाते थे, तब वापस सामान्य होने के लिये उन्हें बाह्य माध्यम का आश्रम लेना पड़ता था। राजवैद्यों ने औषधियों के रूप में ऐसे पेयों का निर्माण किया, जिससे यदि कोई भी उसे पिये तो तुरन्त तनावमुक्त हो सके, चिन्तामुक्त हो सके, और जीवन में आनन्द और सुर एक क्षण में ही प्राप्त हो सके और ऐसे पेय को ही उन्होंने 'सुरा' कहा।

जीवन में सुर प्रदान करे, वह सुरा है। जीवन में रस प्रदान करे, उसे सोमरस की संज्ञा दी गई। ये देवों द्वारा ग्रहण करने योग्य वस्तुएं हैं, इससे जीवन में आनन्द, प्रेम, उमंग, तरंग की प्राप्ति होती थी। परन्तु जो विनाशकारी था, जो तामसी पदार्थ था, जिस पेय का असुर पान करते थे वह 'सुरा' नहीं 'मदिरा' थी, 'मदिरा' अर्थात मद का पोषण करने वाली, अहंकार जैसी तामसी वृत्ति का पोषण करने वाला पेय।

यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि मंत्र चिकित्सा इस बात का कोई दावा नहीं करती कि उसके माध्यम से नशा करने वाला व्यक्ति एकाएक परिवर्तित हो जायेगा। मंत्र चिकित्सा का आधार व्यक्ति का शरीर न होकर उसका मन होता है। स्वयं मंत्र शब्द की व्याख्या से ही यह बात पूर्णता से स्पष्ट होती है -'मनसः त्राणयेति सः' अर्थात् जिस क्रिया के द्वारा मन को त्राण (बंधन मुक्ति) प्राप्त हो वही मंत्र है और नशा करना या व्यसन ग्रस्त होना वास्तव में मन की ही एक स्थिति होती है। यही वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों का भी विचार है। व्यसन ग्रस्त व्यक्ति को भय, दबाव अथवा प्रताड़ना के आधार पर नहीं वरन उन कारणों को दूर करके ही व्यसन मुक्त किया जा सकता है, जो उसके मन पर एक प्रकार से कहें तो दबाव बनाए रखते हैं। मंत्र चिकित्सा यही कार्य करती है।

टोटकों या जिन्हें लघु प्रयोग कहना अधिक उचित रहेगा, का निश्चय ही अपना महत्व होता है किन्तु प्रायः इनमें एक न्यूनता होती है कि इनसे जीवन में केवल तात्कालिक समस्याएं ही हल की जा सकती है। जहां जीवन में निश्चय करके मनोनुकूल परिवर्तन लाना हो वहां साधना मार्ग का अवलम्बन लेना ही अधिक उचित रहता है।

नशे से मुक्ति प्राप्त करने के सन्दर्भ में मंत्र चिकित्सा के अन्तर्गत जिस साधना विधि का वर्णन मिलता है उसे 'अनुकूलन प्रयोग' की संज्ञा दी गई है। इस प्रयोग की विशेषता है कि यदि कोई नशा करने वाला व्यक्ति इसे स्वयं सम्पन्न नहीं करता तो ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति (भले ही वह सम्बन्धी हो या न हो) इसे संकल्प लेकर सम्पन्न कर सकता है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिये मंत्र सिद्ध 'संकल्प शक्ति वृद्धि कवच'' (धारण करने वाला) व 'संकल्प सिद्धि माला' साधक के पास होनी आवश्यक है। नवरात्रि में इस प्रयोग को करने का विधान है। रात्रि के समय इस यंत्र कवच को किसी ताम्रपात्र में रखकर संकल्प सिद्धि माला से निम्न मंत्र की एक माला जप करें।

यह क्रिया निरन्तर 3 दिन तक सम्पन्न करने के पश्चात माला को विसर्जित कर दें तथा यंत्र को या तो रोगी के गले में एक माह तक धारण कराएं अथवा उसके चित्र के साथ बांध कर किसी सन्दूक में रख दें तथा एक माह के पश्चात विसर्जित कर दें। ऐसा करने से शनैः शनैः व्यक्ति की संकल्प शक्ति में वृद्धि होने लगती है और संकल्प शक्ति में वृद्धि ही किसी भी व्यसन से मुक्ति का आधार है। इस प्रकार विजयादशमी के दिन या एक माह की समाप्ति के पश्चात् यंत्र व माला को विसर्जित करके अनुकल परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट न्यौछावर- 2100 रु.

14. जीवन में पूर्ण भाग्योदय प्राप्ति-

1. उद्देश्यः-भाग्योदय प्राप्ति 2. वस्त्रः-पीले
3. आसनः-पीला 4. जाप संख्याः-1 माला
5. साधक की दिशाः-पूर्व 6. मालाः-स्फटिक माला
7. साधना अवधिः-3 दिन
8. साधना सामग्रीः-11 गोमती चक्र, स्फटिक माला
9. मंत्रः-ऐं क्लीं सौं बालात्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः।।

प्रायः साधक के मन में भाग्योदय शब्द की जो धारणा रहती है वह अधूरी कही जा सकती है। भाग्योदय का युवावस्था से ही संबंध नहीं होता वरन् भाग्योदय तो जीवन पर्यन्त चलने वाली घटना होती है। आयु के साथ-साथ इसके अर्थ व्यापक होते रहते हैं। नवरात्रि का सप्तम दिवस सर्व सौभाग्यदायिनी त्रिपुरवासिनी देवी का दिवस है एवं साधक इस दिन यह विशेष प्रयोग कर जीवन में भाग्योदय का निरन्तर क्रम प्राप्त कर सकता है।

प्रारम्भिक मूल पूजन करने के पश्चात् ग्यारह गोमती चक्र लेकर अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर चने की दाल की ढ़ेरी कर स्थापित करें तथा प्रत्येक पर केसर का टीका लगाते हुए-धन प्राप्ति, आयु प्राप्ति, तन्त्र दोष

निवारण प्राप्ति, विदेश यात्रा, गमन, प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता, मनोवांछित विवाह, अनुकूल मित्र प्राप्ति, व्यवसाय प्राप्ति, सौन्दर्य प्राप्ति एवं सर्व प्रकारेण पुष्टि प्राप्ति की ग्यारह स्थितियों का उच्चारण करते हुए इन्हीं से जीवन में निरन्तर भाग्योदय की स्थिति गठित होने की कामना करें। इसके उपरान्त स्फटिक माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

मंत्र जप के उपरान्त सभी गोमती चक्रों को एक डिब्बी में सुरक्षित रख दें। इनका भविष्य में किसी अन्य साधना में प्रयोग न करें। ये सौभाग्य के प्रतीक के रूप में निरन्तर प्रभाव देते ही रहेंगे। हर वर्ष पुनः यह प्रयोग दोहराएं और पिछली सामग्री को विष्णु चरणों में अर्पित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट न्यौछावर राशि- 1100/-

15. क्या अपने पड़ोसियों/किरायेदार से त्रस्त हैं?

1. उद्देश्यः-पड़ौसियों व किरायेदारों से संबंध अनुकूल करने के लिए
2. वस्त्रः-सफेद
3. आसनः-सफेद
4. जाप संख्याः-3 माला
5. साधक की दिशाः-पूर्व
6. साधना अवधिः-5 दिन
7. साधना सामग्रीः-सम्मोहन यंत्र, हकीक चेटक
9. विसर्जनः-विजयादशमी
10. मंत्रः- ।।ॐ ह्रीं ह्रीं हर हर बाधि स्वाहा।।

कहते हैं, यदि जीवन में एक अच्छा मित्र मिल जाए तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि होती है, उसी प्रकार अच्छा पड़ौसी मिल पाना भी सौभाग्य से ही हो पाता है। वर्ना आजकल शहरी जीवन में हाल तो यह है कि यदि आपकी या आपके परिवार जनों की तरक्की हो रही है तो पता नहीं क्यों उनके पेट में दर्द हो जाता है। छोटी-छोटी बात को लेकर झगड़ा करते रहना, बहस करना या अन्य लोगों में बुराई करना यह सब आपके सुखी-शान्त जीवन में बाधा डालता है। वहीं किरायेदार होते हुए भी वह आप पर हावी होने की कोशिश करते हैं जैसे कि वे किरायेदार नहीं है बल्कि इस घर के मालिक हैं जिनकी पल-पल हर छोटी-बड़ी टूट-फूट का खामियाजा भुगतना आपकी त्रासदी है वह समय से उनके द्वारा मांगी गई समस्त सुविधाओं को पूर्ण करना आपकी जिम्मेदारी हैं लेकिन वक्त पे किराया ना देना उनकी तानाशाही है वह समयावधि समाप्त होने पर भी मकान खाली न करना व मालिकाना हक जताने से आप परेशान हैं तो यह प्रयोग निश्चिय ही आपकी परेशानियों को कम करेगा।

सम्मोहन द्वारा आप अपने पड़ोसियों की व किरायेदारों की विपरीत वृत्तियों को अपने अनुकूल बना सकते हैं, जिससे फिर वे आपके विरुद्ध सोचना स्वाभाविक रूप से बंद कर देते हैं।

यह प्रयोग पांच दिन का है। नवरात्रि में किसी भी दिन यह साधना की जा सकती है। भोजपत्र अथवा सफेद वस्त्र पर कुंकुंम से एक गोला बनाए और उस गोले में अपने पड़ोसी/किराएदार का नाम लिख दें। नाम के ऊपर ''सम्मोहन यंत्र'' को स्थापित करें। यंत्र के बीचो-बीच हकीक चेटक को स्थापित करें। अब यंत्र और हकीक चेटक को कुंकुंम, अक्षत, धूप आदि से पूजन करें। इसके बाद 3 माला उपरोक्त मंत्र का जाप करें।

प्रत्येक मंत्र के उच्चारण के साथ कुछ काले तिल यंत्र पर अवश्य चढ़ाते जाएं। इस प्रकार 5 दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति पर यंत्र पर अर्पित किया गया सारा तिल अग्नि में जला दें तथा यंत्र हकीक चेटक को दुर्गा मंदिर में मां के चरणों में अर्पित कर दें।

नवरात्रि का पर्व हम हिन्दूओं का, हम संसार सागर में अगर सबसे ज्यादा किसी के ऋणी है तो वो है 'माँ'। 'माँ' ममता, दया, करूणा, प्रेम का सागर है। पुत्र कुपुत्र हो जाये पर माता कुमाता नहीं होती, माता का हृदय विशाल है, वो अपने पुत्र की सभी गलतियों को, कमजोरियों को अपने सीने में दबा लेती है और ममता से सराबोर करती है, इस 'माँ' का व्यापक रूप है जगतजननी 'मॉ दुर्गा' यह शक्तिरूपा हैं और माँ की पूजा स्तुति से हम अपना नव वर्ष आरम्भ करते हैं, यह कितना सुखद है, जगत्माता श्री दुर्गा की उपासना सर्व विघ्नकल्याणकारी और समस्त मनोरथों को पूर्ण कर देने वाली अमोघ उपासना है। बडे-बडे दुर्भाग्यग्रस्त व्यक्ति भी इनकी आराधना में आते ही सौभाग्यशाली होते हैं, विभिन्न समयों पर की जानेवाली दुर्गा की उपासना में नवरात्र में की जाने वाली दुर्गोपासना के सम्बंध में स्वयं श्री भगवती के मुखारविन्द की वाणी में श्लोकः-

''चैत्रे ये मानवालोके नवरात्रे समागते। पूजयन्ति च माँ भक्त्या
संस्त्रुवन्ति नहर्षय।।
ते भवन्ति ध्रुणं सधो नराः पूर्णमनोरथा। तेषां गेहे त्वहं
लक्ष्मीर्भूत्वा नित्यं वसामि च।।''

हे महर्षियों! जो मनुष्य इस लोक में नवरात्र आने पर मेरी पूजा करते हैं और भक्ति से स्तुति करते हैं, वे निश्चय ही पूर्ण-मनोरथ को प्राप्त होते हैं और उनके घर में लक्ष्मी रूप में नित्य निवास करती हूँ। भगवानश्री राम ने भी दुर्गा की उपासना की तब माँ ने वरदान दिया कि आप 'सीताराम' नाम से विश्वविख्यात होगें एवं आपकी आराधना करने वाले मुझे भी सहज ही प्राप्त होगें।

साधना सामग्री पैकेट न्यौछावर-1500 रू.

16. शत्रु विजय शिरोमणि प्रयोग-

1. उद्देश्यः-शत्रुओं पर विजय प्राप्ति एवं विद्या के क्षेत्र में उपलब्धि हेतु
2. वस्त्रः-लाल
3. आसनः-लाल
4. जाप संख्याः-3 माला नित्य
5. साधक की दिशाः-दक्षिण
6. मालाः-साफल्य माला
7. साधना अवधिः-4 दिन
8. साधना सामग्रीः-छिन्नमस्ता यंत्र एवं साफल्य माला
9. विसर्जनः-विजयादशमी
10. मंत्रः-

ॐ क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये विजयसिद्धिं शत्रुनाशाय फट्।।

कई बार व्यक्ति मुकदमों में इतना उलझ जाता है कि उसका जीवन ही भार स्वरूप हो जाता है उसका धन मुकदमें की अग्नि में ही नष्ट होता रहता है और उसके शत्रु हमेशा उस पर हावी होते रहते हैं। ऐसे में व्यक्ति पूर्णतः असहाय महसूस करने लगता है और उसे अपना भाग्य अंधकारमय प्रतीत होता है। ऐसी स्थिति में केवल एक ही उपाय शेष रह जाता है और वह है 'छिन्नमस्ता शिरोमणि प्रयोग'।

'शिरोमणि' का अर्थ है, कि व्यक्ति जहाँ भी जाए, जिस क्षेत्र में भी प्रवेश करें, उसका स्थान सर्वोपरि हो और वास्तव में ही इस प्रयोग को संपन्न करने के बाद जहां व्यक्ति, शत्रुओं के ऊपर हावी हो जाता है, सभी मुकदमों में पूर्णतः विजयी होता है, वहीं विद्या के क्षेत्र में भी अग्रणी हो जाता है। समाज में उसका सम्मान होता है, यहां तक कि विद्वत् समाज भी उसे इज्जत की दृष्टि से देखता है। साथ ही साथ धन प्राप्ति में भी वह सर्वोच्च स्थिति पर होता है और समाज के सबसे सम्पन्न व्यक्तियों में गिना जाता है।

इस प्रयोग में 'छिन्नमस्ता यंत्र' एवं 'साफल्य माला' की आवश्यकता होती है। नवरात्रि में साधक स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठें और अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर 'छिन्नमस्ता यंत्र' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करें। इसके उपरांत 'साफल्य माला' से उपरोक्त मंत्र की 3 माला नित्य मंत्र जप करें।

यह मंत्र अत्यधिक तेजस्वी और शीघ्र फल देने वाला है। साधक को चाहिए कि विजयादशमी के दिन यंत्र एवं माला को किसी जलाशय में प्रवाहित कर दें या दुर्गा मंदिर में कुछ पुष्प के साथ दुर्गा जी के चरणों में अर्पित कर दें,

ऐसा करने से यह प्रयोग सफल होता है और साधक निरन्तर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने लगता है।

साधना सामग्री पैकेट न्यौछावर- 1500/-रुपये।

17. सरस्वती विद्या प्रदायक प्रयोग-

प्रयोजन-

नवरात्रि के दौरान सरस्वती पूजन का विशिष्ट महत्त्व है तथा संतान की विद्योन्नति के लिए इस प्रयोग को संपन्न करना उचित और अनिवार्य भी है। संतान की पढ़ाई में रूचि बढ़ाने के लिए इस अचूक प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिये।

प्रयोग विधि-

वैसे तो किसी भी नवरात्रि के दिन इसे संपन्न किया जा सकता है फिर भी अष्टमी की रात्रि में सरस्वती पूजन का विशेष मुहूर्त है। रात्रि में स्नान आदि करके श्वेत वस्त्र धारण करके उत्तर दिशा की ओर मुख करके कुश अथवा कपड़े के सफेद आसन पर बैठ जायें। बालक छोटा हो, तो माता-पिता प्रयोग संपन्न करें। अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट अथवा पाट रखें। इसके पश्चात् उस पर सफेद वस्त्र बिछा दें तथा उस पर एक थाली रखें तथा थाली में एक शहद से भरी हुई छोटी कटोरी रखें। अब 'सरस्वती यंत्र' को पंचामृत से स्नान करवाकर पुष्प अर्पित करें। अगरबत्ती अथवा धूप आदि भी लगा लें। इसके बाद यंत्र को शहद वाली कटोरी में डूबा दें। अब 'सरस्वती माला' से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ ऐं वाग्देव्यै वरदायै ॐ नमः।।

मंत्र जप के पश्चात् यंत्र को कटोरी में से निकाल लें तथा उस पर लगे शहद को अनामिका अंगुली से बालक/बालिका की जीभ पर 'ऐं' बीज मंत्र लिखें। अगले दिन यंत्र तथा माला को जल में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग से आपके बच्चों की मेधा शक्ति में वृद्धि होगी तथा उनकी स्मरण शक्ति भी बढ़ेगी।

साधना सामग्री पैकेट- 1500/-

18. कमला कंचन प्रयोग-

प्रयोजन-

यह प्रयोग जहां व्यक्ति के जीवन में धन, व्यापार, बुद्धि, आर्थिक उन्नति एवं भौतिक सुखों को प्रदान करता है, वहीं साथ ही साथ आत्मिक उन्नति एवं आध्यात्मिक उत्थान भी प्रदान करता है। ऐसे व्यक्ति के
एक हाथ में भोग तो दूसरे हाथ में मोक्ष होता है। इसके द्वारा व्यक्ति भौतिक क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर पहुंचने में समर्थ होता है और हर प्रकार से सफल होता है।

प्रयोग विधि-

नवरात्रि के सातवें दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करें। साधक स्वच्छ पीली धोती धारण कर लाल आसन पर पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बैठें और अपने सामने लाल वस्त्र से ढके बाजोट पर 'कमला यंत्र' स्थापित कर उसका कुंकुंम तथा गुलाब से पूजन करें और फिर निम्न मंत्र का 30 मिनट तक मंत्र जप कमला कंचन पर त्राटक करते हुए करें-

मंत्र-।। ॐ ह्रीं कमले मोक्षं साधय ऐश्वर्यं देहि श्रीं ॐ नमः।।

अगले दिन 'कमला कंचन' को किसी जलाशय में अर्पित कर दें, ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध होता है और साधक वह प्राप्त कर सकता है जो वह चाहता है।

साधना सामग्री पैकेट- 1500/-रुपये।

19. विजया क्लेश हारक प्रयोग-

प्रयोजन-

कभी-कभी ग्रहों की विपरीत चाल अथवा किन्हीं अन्य बाहरी कारणों के फलस्वरूप घर की शांति में विघ्न पड़ जाता है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे सभी पारिवारिक संबंध बिगड़ते जा रहे हैं, जिनके कारण मन अशांत एवं अधीर हो उठता है। हर समय कुछ अनिष्ट हो जाने का भय मन में बना रहता है इस स्थिति के उन्मूलन के लिए नवरात्रि ही उचित अवसर होता है। विजया क्लेशहारक प्रयोग एक अत्यंत विलक्षण प्रयोग है, जिसके द्वारा गृह क्लेश मिटाया जा सकता है।

प्रयोग विधि-

यह प्रयोग भी नवरात्रि की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है। इसके लिए रात्रि में स्नान आदि करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें तथा पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बैठें। बैठने के लिये लाल रंग के आसन का उपयोग करें। अपने सामने एक बाजोट रखकर उस पर एक थाली रखें तथा उसमें हल्दी से रंगे चावलों की एक ढ़ैरी लगायें। अब इन चावलों की ढ़ैरी पर 'सिद्ध विजया क्लेश हारक गुटिका' स्थापित करें। संकल्प करें-' मैं अमुक समस्या के समाधान, विघ्न निवारण के लिये यह प्रयोग कर रहा हूँ, उसका निवारण हो।'

तदुपरांत तेल का दीपक जलाकर निम्न मंत्र का 'विजया माला' से 11 माला मंत्र जप करें-

मंत्र-।। ॐ क्लीं क्लेश नाशय हुं फट्।।

अगले दिन माला एवं गुटिका को भूमि में दबा दें अथवा जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट- 1500/-रुपये।

ये प्रयोग आप नवरात्रि से आरंभ कर किसी भी दिन संपन्न कर सकते हैं, ये प्रयोग आप इन दिवसों के पश्चात् किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को भी कर सकते हैं। निश्चय ही यह नवरात्रि आप सबके लिए मंगलमय हो, कल्याणकारी हो। आप सभी इन दिव्य प्रयोगों से लाभ उठाएं, यह हमारा अभीष्ट है, यही हमारा चिंतन है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

नोटः- वास्तव में ये सभी प्रयोग अपने आप में ही पूर्ण जाग्रत स्वयं सिद्ध एवं शीघ्र फल देने वाले हैं। इन सभी प्रयोगों में जहां-जहां भी वस्त्र का रंग नहीं बताया है वहां पीला वस्त्र या पीली धोती समझें। जहां पूजन सामग्री के बारे में कुछ नहीं लिखा हैं उन्हें वस्त्र में लपेट कर जलाशय में विसर्जित कर दें। ये प्रयोग नवरात्रि काल के पश्चात् किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को भी कर सकते हैं। प्राण-प्रतिष्ठित एवं शुद्ध सामग्री प्राप्त करने के लिये पत्रिका कार्यालय, जोधपुर सम्पर्क कर सकते हैं।

विश्व तंत्र-ज्योतिष/त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र,
प्लॉट नं. 1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैंन गेट के पास, जोधपुर- 342001 (राज.)
फोन नं. 0291-2621625, 2440011, 2440111

नोट - इस लेख में प्रकाशित सभी प्रयोगों की न्यौछावर राशि डाकखर्च सहित है। हम किसी भी प्रकार की सामग्री आपको निजी व्यक्ति के हाथ नहीं भेजते। यदि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत तौर पर आपको हमारे नाम से सामग्री लाकर दे रहा है तो ये आपके साथ धोखा हो रहा है। ऐसे व्यक्ति का तुरन्त फोटो खींचकर संस्थान को भेजे और साथ ही ऐसे व्यक्ति को पुलिस को सुपूर्द करें। और अधिक सुरक्षा एवं तुरन्त कौरियर से सामग्री के लिये आप संस्थान के बैक एकाउन्ट में पैसा जमा करवाकर सूचित करें। संस्थान के बैंक एकाउन्ट नम्बर इसी अंक में प्रकाशित हैं।

♦♦♦